



रामचरितमानस के सिद्ध चमत्कारी 'मन्त्र'

गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस एक प्रासादिक ग्रन्थ है। ऐसी मान्यता है कि इस असाधारण ग्रन्थ के दोहे-चौपाई मन्त्र-सदृश पवित्र एवं प्रभावकारी हैं तथा आश्रित भक्त को अपेक्षित फल प्रदान करने में समर्थ हैं। श्रीरामचरितमानस का पाठ या अनुष्ठान करने मन्त्र की भांति जप करने से अनेक सकाम एवं निष्काम साधकों को अभीष्ट की प्राप्ति हुई है, और ऐसे प्रसङ्ग प्रायः अनेक देखने में आये हैं। यहाँ अनुष्ठान में प्रयुक्त होने वाले कुछ मानस-सिद्ध मन्त्र दिये जा रहे हैं, जिनसे साधक लोग लाभ उठा सकते हैं। जो लोग संस्कृत नहीं जानते तथा तांत्रिक अनुष्ठानों के यम-नियम, आचार व व्यवहार से घबराते हैं, उनके लिए मानस के ये मन्त्र 'राम-बाण' औषधिस्वरूप हैं एवं सब प्रकार की सिद्धियों को देने वाले हैं।

नियम—

मानस के दोहे-चौपाइयों को सिद्ध करने का विधान यह है कि किसी भी शुभ दिन की रात्रि को दस बजे के बाद हवन के द्वारा मन्त्र सिद्ध करना चाहिए। फिर जिस कार्य के लिए मन्त्र जप की आवश्यकता हो, उसके लिए नित्य जाप करना चाहिए। काशी में भगवान् शंकरजी ने मानस की चौपाइयों को मन्त्र-शक्ति प्रदान की है इसलिए काशी की ओर मुख करके, उन्हें साक्षी बनाकर, श्रद्धा से जप करना चाहिए, अवश्य लाभ मिलता है, यह अनुभूत है।

हवन की सामग्री—

(1) चन्दन का बुरादा (2) तिल (3) शुद्ध घी (4) शुद्ध चीनी (5) अगर (6) तगर (7) कपूर (8) शुद्ध केसर (9) नागर मोथा (10) पञ्चमेवा (11) जौ और (12) चावल

आवश्यक जानकारी—

जिस उद्देश्य के लिए चौपाई, दोहे या सोरठे का जप करना बताया गया है,

उसको सिद्ध करने के लिए एक दिन हवन की सामग्री से उस चौपाई, दोहे या लोटे के द्वारा 108 बार हवन करना चाहिए। यह हवन केवल एक ही दिन करना है। इसके लिए कोई अलग कुण्ड बनाने की आवश्यकता नहीं है। मामूली मिट्टी की वेदी बनाकर, उस पर अग्नि रखकर उसमें आहुति दे देनी चाहिए। प्रत्येक आहुति में चौपाई के अन्त में 'स्वाहा' बोल देना चाहिए। यह हवन रात को 10 बजे के बाद करना होगा।

प्रत्येक आहुति लगभग 10 ग्राम (सब चीजें मिलाकर) होनी चाहिए। इस हिसाब से 108 आहुति के लिए एक किलो सामग्री सब चीजें मिलाकर बना लेनी चाहिए। कोई चीज कम-ज्यादा भी हो तो आपत्ति नहीं। पञ्चमेवा में पिस्ता, बादाम, किशमिश, अखरोट, काजू ले सकते हैं। इनमें से कोई चीज न मिले तो उसके बदले में अखरोट या मिश्री मिला सकते हैं। केसर शुद्ध चार आने भर ही डालने से काम चल जायेगा, अधिक की आवश्यकता नहीं है।

हवन करते समय माला रखने की आवश्यकता एक सौ आठ की संख्या गिनने के लिए है। इसलिए दाहिने हाथ से आहुति देकर फिर दाहिने हाथ से ही माला का एक-एक मनका सरका देना चाहिए। फिर माला या तो बायें हाथ में ले लेनी चाहिए या आसन पर पर रख देनी चाहिए। फिर आहुति देने के लिए बाद में उसे दाहिने हाथ में लेकर एक मनका सरका देना चाहिए। माला रखने में असुविधा हो तो गेहूं, जौ या चावल आदि के 108 दाने रखकर उनसे भी गिनती की जा सकती है। बैठने के लिए आसन ऊन का अथवा कुश का होना चाहिए। सूती कपड़े का हो तो वह धोया हुआ पवित्र होना चाहिए।

मन्त्र सिद्ध करने के लिए चौपाई या दोहा यदि लंका-काण्ड का हो तो उसे शनिवार को हवन करके सिद्ध करना चाहिए। दूसरे काण्डों के चौपाई, दोहे को किसी भी दिन हवन करके सिद्ध किया जा सकता है। रक्षा-रेखा की चौपाई एक बार बोलकर, जहां बैठे हों, वहां अपने आसन के चारों ओर चौकोर रेखा खींच लेनी चाहिए। इस चौपाई को भी ऊपर लिखे अनुसार एक सौ आठ बार आहुति देकर सिद्ध कर लेना चाहिए। पर रक्षा-रेखा न भी खींची जाये तो आपत्ति नहीं है।

एक दिन हवन करने से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। इसके बाद जब तक कार्य सफल न हो तब तक उस मन्त्र (चौपाई, दोहे) का प्रतिदिन कम-से-कम एक सौ आठ बार प्रातःकाल या रात्रि को जब सुविधा हो, जप करते रहना चाहिए, अधिक कर सकें तो अधिक अच्छा फल मिलेगा। मानस के दोहे विपरीत या प्रतिकूल फल नहीं देते। अगर चाहें तो नियमित के जप के सिवा दिन भर चलते-फिरते भी उस चौपाई या दोहे का जप कर सकते हैं। जितना अधिक हो, उतना ही उत्तम है।

कोई दो कार्यों के लिए चौपाइयों का अनुष्ठान एक साथ करना चाहें तो कर सकते हैं पर दो चौपाइयों को पहले दो दिनों में अलग-अलग हवन करके सिद्ध कर लेना चाहिए।

स्त्रियों के लिए—

स्त्रियाँ भी इस अनुष्ठान को कर सकती हैं, परन्तु रजस्वला होने की स्थिति में जप बन्द रखना चाहिए। हवन भी रजस्वला अवस्था में नहीं करना चाहिए। जप करते समय मन में यह विश्वास अवश्य रखना चाहिए कि “भगवान् श्रीसीतारामजी की अहैतुकी कृपा से मेरा कार्य अवश्य सफल होगा।” विश्वासपूर्वक जप करने पर सफलता अवश्य मिलती है।

1. चमत्कारिक रक्षा-रेखा—

मन्त्र ‘सिद्ध’ करने के लिए या किसी संकटपूर्ण जगह पर रात व्यतीत करने के लिए अपने चारों ओर रक्षा की रेखा खींच लेनी चाहिए। लक्ष्मणजी ने सीताजी की कुटीर के आस-पास जो रक्षा-रेखा खींची थी, उसी लक्ष्य पर यह रक्षा-मन्त्र बनाया गया है। इसे एक सौ आठ आहुति द्वारा सिद्ध कर लेना चाहिए—

मामभिरक्षाय रघुकुलनायक ।

धृत वर चाप रुचिर कर सायक ॥

2. विचार शुद्ध करने के लिए—

ताके जुग पद कमल मनावउँ ।

जासु कृपा निरमल मति पावउँ ॥

3. आपसी संशय की निवृत्ति के लिए—

रामकथा सुन्दर कर तारी ।

संशय बिहग उड़ावनिहारी ॥

—व. 0/127

4. विरक्ति के लिए—

भरत चरित कीरित नेमु, तुलसी जो सादर सुनहिं ।
सीय राम पद प्रेमु, अवसि होइ भव रस विरति ॥

5. भक्ति की प्राप्ति के लिए—

भगत कल्पतरु प्रनत हित, कृपासिंधु सुखधाम।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु, देहु दया करि राम॥

6. श्री हनुमानजी को प्रसन्न करने के लिए—

सुमिरि पवनसुत पावन नामू।
अपने बस करि राखे रामू॥

7. मोक्ष-प्राप्ति के लिए—

मो सम दीन न, दीन हित, तुम्ह समान रघुवीर।
अस विचारि रघुबंस मनि, हरहु विषम भव भीर॥

—उ./1180

8. श्रीसीतारामजी के दर्शन के लिए—

नील सरोरुह नील मनि, नील नीरधर स्याम।
लाजहिं तन सोभा निरखि, कोटि-कोटि सत काम॥

9. श्री जानकीजी के दर्शन के लिए—

जनक सुता जग जननि जानकी।
अतिशय प्रिय करुना निधान की॥

10. श्री रामचन्द्रजी को वश में करने के लिए—

केहरि कटि पट पीतधर, सुषमा सील निधान।
देखि भानुकुलभूषनहि, बिसरा सखिन्ह अपान॥

—बा./241

11. सहजस्वरूप-दर्शन के लिए—

भगत बछल प्रभु कृपानिधाना।
बिस्वासहुं ते प्रगटे भगवाना॥

12. भगवत्प्रेम की प्राप्ति के लिए—

कामिहि नारि पिआरि जिमि, लोभिहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर, प्रिय लागहु मोहि राम ॥

—उ./1180

13. श्रीराम की शरण प्राप्ति के लिए—

सुनि प्रभु वचन हरष हनुमाना ।
सरनागत बच्छल भगवाना ॥

—सु./838

14. माता पार्वती को प्रसन्न करने के लिए—

धन्य धन्य गिरिराजकुमारी ।
तुम्ह समान नहि कोउ उपकारी ॥

—बा./125

15. प्रभु कृपा एवं संकट-निवृत्ति के लिए—

मंगल भवन अमंगल हारी ।
द्रवउ सो दशरथ अजिर बिहारी ॥
दीनदयाल बिरिदु सम्भारी ।
हरहु नाथ मम संकट भारी ॥

—सु./822

16. प्रेम बढ़ाने के लिए—

सब नर करहिं परस्पर प्रीती ।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती ॥

17. विपत्तिनाश के लिए—

राजिव नयन धरें धनु सायक ।
भगति विपति भंजन सुखदायक ॥

18. संकटनाश के लिए—

जौ प्रभु दीन दयालु कहावा । आरत हरन वेद जसु गावा ॥
जपहिं नामु जन आरत भारी । मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ।
दीन दयाल बिरिदु संभारी । हरहु नाथ मम संकट भारी ॥

19. कठिन क्लेश-नाश के लिए—

हरन कठिन अति कलुष कलेसू ।
महामोह निसि दलन दिनेसू ॥

20. विघ्न विनाश के लिए—

सकल विघ्न ब्यापहिं नहिं तेहो ।
राम सुकृपा बिलोकहिं जेही ॥

21. घर में माङ्गलिक कामना हेतु—

जब तें रामु ब्याहि घर आए ।
नित नव मंगल मोद बधाए ॥

22. विविध रोगों तथा उपद्रवों की शांति के लिए—

दैहिक दैविक भौतिक तापा ।
राम राज नहिं काहुहिं ब्यापा ॥

23. मस्तिष्क की पीड़ा दूर करने के लिए—

हनूमान अंगद रन गाजे । हाँक सुनत रजनीचर भाजे ॥

24. विषनाश के लिए—

नाम प्रभाउ जान सिय नीको ।
कालकूट फलु दीन्ह अमी को ॥

25. भूत को भगाने के लिए—

प्रनवउँ पवनकुमार, खल बन पावक ग्यानधन।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम सर चाप धर॥

26. नजर झाड़ने के लिए—

स्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी।
निरखहिं छवि जननी तून तोरी॥

27. जीविका प्राप्ति के लिए—

बिस्व भरन पोषन कर जोई।
ताकर नाम भरत अस होई॥

28. लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए—

जिमि सरिता सागर महुं जाहीं।
जद्यपि ताहि कामना नाही॥
मिलि सुख संपत्ति बिनहिं बोलाएँ।
धरमसील पहिं जाहिं सुभाएँ॥

29. पुत्र-प्राप्ति के लिए—

ऐहि विधि गर्भसहित सब नारी।
भई हृदय हरषित सुख भारी॥
जा दिन तें हरि गर्भहिं आए।
सकल लोक सुख संपत्ति छाए॥

30. सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए—

जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं।
सुख संपत्ति नाना विधि पावहिं॥

31. मनोरथ-सिद्धि के लिए—

भव भेषज रघुनाथ जसु, सुनहिं जे नर अरु नारि।
तिन्ह कर सकल मनोरथ, सिद्ध करहिं त्रिसिरारि॥
अथवा

जदपि सखा तब इच्छा नाहीं।
मोर दरसु अमोघ जग माहीं॥
अस कहि राम तिलक तेहि सारा।
सुमन वृष्टि नभ भई अपारा॥

—सु. /845

32. मुकद्दमा जीतने के लिए—

पवन तनय बल पवन समाना।
बुधि बिबेक बिग्यान निधाना॥
कवन सो काज कठिन जग माहीं।
जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं॥

—कि. /790

33. शत्रुता-नाश के लिए—

बयरु न कर काहू सन कोई।
राम प्रताप विषमता खोई॥

34. विवाह के लिए—

तब जनक पाई वसिष्ठ आयसु, ब्याह साज सँवारि कै।
मांडवी श्रुतकीरति उरमिला कुँअरि लई हँकारि कै॥

35. नये शहर में प्रवेश करते समय, शत्रु के सामने जाते समय
व यात्रा की सफलता के लिए अमोघ मंत्र—

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा।
हृदय राखि कोसलपुर राजा॥

गरल सुधा रिपु करहि मिताई।
गोपद सिन्धु अनल सितलाई॥

36. परीक्षा में पास होने के लिए—

मोरि सुधारिहि सो सब भाँती।
जासु कृपा नहिं कृपा अघाती॥

37. विद्याप्राप्ति के लिए—

गुरुगृह गए पढ़न रघुराई।
अल्प काल विद्या सब पाई॥

38. कातर की रक्षा के लिए—

मोरें हित हरि सम नहिं कोउ।
एहि अवसर सहाय सोई होउ॥

39. भगवत्स्मरण करते हुए आराम से मरने के लिए—

राम चरन दृढ़ प्रीति करि, बालि कीन्ह तनु त्याग।
सुमन माल जिमि कंठ तें, गिरत न जानइ नाग॥

—कि.

40. पोलियो ठीक करने व गूंगे को बोलाने के लिए—

मूक होई बाचाल, पंगु चढ़ई गिरिबर गहन।
जासु कृपा सो दयाल, द्रवउ सकल कलि मल दहन॥

—ब.

41. रोग-निवृत्ति एवं मोक्ष-प्राप्ति हेतु—

जासु नाम भव भेषज, हरन घोर त्रय सूल।

सो कृपाल मोहि तो पर, सदा रहउ अनुकूल ॥

—उ. /1172

42. बिना औषध के रोग नष्ट करना—

राम कृपाँ नासहिं सब रोगा ।
जौ एहि भाँति बनै संयोगा ॥
सदगुर बैद बचन बिस्वासा ।
संजम यह न विषय कै आसा ॥

—उ. /1168

43. सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त करने के लिए—

बंदउँ बालरूप सोइ रामू ।
सब विधि सुलभ जपत जिसु नामू ॥
मंगल भवन अमंगल हारी ।
द्रवउ सो दशरथ अजिर बिहारी ॥

—बा. /126